# अध्याय द्वितीय

# साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय–2

# सम्बधित साहित्य का पुनरावलोकन

## 2.1 प्रस्तावना :

ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता की ज्ञान की सीमा कहाँ पर हैं वर्तमान समय में ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। सतत मानवीय प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिल सकता है। किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में साहित्य का पुनरावलोकन महत्वपूर्ण कदम है। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एवं प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है।

संबंधित साहित्य से तात्पर्य है अनुसंधान की समस्या से संबंध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों, एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है। उनके अभाव में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य किया गया है तथा इससे निष्कर्ष क्या आये? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

गुडवार तथा स्केट्स कहते है– 'एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम् खोजों से परिचित होता रहें, उस प्रकार जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाला तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।

संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता है।

## 2.2 साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व :-

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह अन्य परिस्थितियों में पुनः किया जा चुका है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधान कर्ता को अपने अनुसंधान के निष्कर्ष और उसके निष्कर्ष मिलाने में मदद मिलती है।
4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. संबंधित साहित्य की समीक्षा करने से ही हम अपनी समस्या को हल करने की विधि व प्रविधि को समझ सकते है।

अतः उपयुक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान से बडा महत्व है।

## 2.3 संबंधित साहित्य का अध्ययन

- एस.आई.आर.टी. राजस्थान (1966) में कक्षा आठवी के विद्यार्थियों की काव्य पाठ में रूचि का अध्ययन किया गया। जिसके उद्देश्य हैः-

1. कक्षा आठवी के विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तक में दी गई कविता की विषय वस्तु भाषा एवं शैली के संदर्भ में रूचि का अध्ययन करना।
2. स्थानीय क्षेत्रीय भाषा हदौटी और मारवाडी में लिखित कविताओं के प्रति विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन करना तथा

3. कक्षा आठवी की पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों की रूचि अनुसार कविताओं के चयन के बारे में सुझाव देना।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न है– कि विद्यार्थी, महापुरूषों, मातृभूमि, देशभक्ति, बहादुरी, राष्ट्रवादिता से संबंधित विषयों की कविता में रूचि रखते है तथा सुख–दुःख दर्द, अग्नि से संबंधित विषयों में कम रूचि रखते है। भाषा की दृष्टि से क्षेत्रीय भाषा में लिखित गेयात्मक में अत्यधिक रूचि रखते है, संगीतात्मक लयबद्ध कविता विद्यार्थियों को उत्साहित करती है तथा विद्यार्थी मैगजीन आदि में दी गई कविताओं को भी पढाने में रूचि रखते है।

- <u>के.जे. रमा फानी</u> (2005)

  अपने पी.एच.डी. के लिए ''माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की भाषा विज्ञान क्षमता और सृजनात्मकता के बीच संबंध का अध्ययन।'' नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। यह अध्ययन आंध्रप्रदेश के वारन्गल जिले के कक्षा–9 के 300 बच्चों पर किया गया।

  <u>उद्देश्य</u> :–

  1. भाषा विज्ञान क्षमता और सृजनात्मक के बीच संबंध का अध्ययन करना।
  2. भाषा विज्ञान क्षमता और सृजनात्मकता के बीच संबंध का अध्ययन करना।

  <u>निष्कर्ष</u>:–

  1. यह अध्ययन से यह पाया गया कि भाषा विज्ञान क्षमता और सृजनात्मकता में सकारात्मक संबंध है।
  2. भाषा विज्ञान क्षमता और सृजनात्मकता के तत्वों के बीच सकारात्मक संबंध है।

3. सृजनात्मकता के तीन तत्व मौलिकता, नवीनता और प्रवाहिता से बच्चों की भाषा विज्ञान क्षमता का भविष्य कथन कर सकते है।

- <u>शर्मा. प्रशांत .</u>(1989)

अपने पी.एच.डी. के लिए छात्रों की बौद्धिक व सृजनात्मकता का भाषा लेखन योग्यता के आधार पर उनकी दक्षता का अध्ययन किया।

<u>उद्देश्य :-</u>

1. योग्यता का अंतर लिंग के आधार पर और राज्य के आधार पर देखना।

2. लेखन योग्यता और बौद्धिकता का नवीनता प्रवाहिता और मौलिकता के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करना।

<u>निष्कर्ष:-</u>

1. शहरी छात्र ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा बंगाली भाषा योग्यता परीक्षण में अधिक सफल पाये गये है और छात्रायें शहरी और ग्रामीण ऐसा भेद नहीं पाया गया।

2. शहरी छात्रों और छात्राओं ने ग्रामीण छात्रों और छात्राओं की अपेक्षा लेखन योग्यता परीक्षण में अधिक अंक प्राप्त किये।

3. लेखन योग्यता परीक्षण का मापन सामान्य बुद्धि नवीनता प्रवाहितता और मौलिकता द्वारा किया जाता है।

- <u>श्रीवास्तव मिनी</u> (1999)

अपने एम.एड् के लिए प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन।

उद्देश्य :

1. कक्षा–5 में अध्ययन रूचि की हिन्दी भाषा उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए उचित उपकरण का निर्माण करना।

2. कक्षा–5 के विद्यार्थीयों की हिंदी भाषा की क्षमताओं का परीक्षण करना।

- प्राथमिक शिक्षक/शिक्षिकाओं से साक्षात्कार करना।

- अग्रवाल (1981)

ने पढ़ने की योग्यता परीक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पढ़ने की योग्यता, शाब्दिक एवं अशाब्कि उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन किया।

उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों की पढ़ने की योग्यता पर व्यक्तिगत ज्ञानात्मक तथा अज्ञानात्मक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :

छात्र एवं छात्राओं के बीच उनकी पढ़ने की क्षमता, पढ़ने की आदतों शैक्षिक उपलब्धियों, मितव्ययता अभिभावकों के प्रति उनकी अभिवृत्ति आदि के बीच अंतर पाया गया।

- परमार विजय कुमार (2004)

अपने लघुशोध में कक्षा सातवी के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन करना।

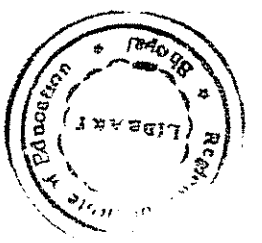

निष्कर्षः

लिंग भेद का विद्यार्थियों के व्याकरणीक ज्ञान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान को प्रभावित करते है।

- देसाई, के. जी. (1986)

ने कक्षा 4 के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता का निदान एवं उपचारात्मक शिक्षण पर एक प्रोजेक्टर लिया था।

निष्कर्षः-

1. पूर्व की कक्षाओं से जो विद्यार्थियों ने भाषा में लिखा उसमें अनेक दोष पाए गए। जैसे शब्दों में त्रृटि, पत्रलेखन में गलती, खराब लिखावट दोषपूर्ण उच्चारण, गलत वाक्य रचना आदि।
2. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाऐं न लेने के कारण यह दोष पाए गए साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि न लेना था, विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में।

- इन्द्रपुरकर (1968)

ने चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन से संबंधित शोध किया।

निष्कर्षः-

1. छात्रों द्वारा शब्दों को बोलने में बार-बार गलतियाँ होती है।
2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया कि शब्द उच्चारण में भी बार बार त्रुटियाँ होती है।
3. लिखित परीक्षण द्वारा यह पाया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते है।

- अमिता सिंह (2000)

  ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में अधिगम कठिनाइयों के उपाय नामक विषय पर अध्ययन किया।

  निष्कर्षः-

  1. विद्यार्थियों को मुहावरे के वाक्य प्रयोग में कठिनाईयाँ होती थी।
  2. विद्यार्थियों को लेखन में कठिनाईयाँ होती थीं
  3. अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी हिंदी भाषाओं में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते है।

- राजकुमार (1994) में अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक वर्ग के छात्रों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर लघुशोध कार्य किया और यह निष्कर्ष निकाला कि अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों की उपलब्धि बहुसंख्यक छात्रों की तुलना में कम है जिसका विवरण उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति का कमजोर होना है।

- कुमार एस.ए. (1985) ने विशिष्ट और औसत विद्यार्थियों की रूचि आवश्यकता तथा समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य हैं, विशिष्ट विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता तथा समायोजन समस्या को पहचानना एवं विशिष्ट तथा सामान्य विद्यार्थियों की रूचि आवश्यकता तथा समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना। इस अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि विशिष्ट विद्यार्थी वैज्ञानिक, मेडिकल एवं तकनीकी क्षेत्रों में अधिक रूचि तथा कला व खेल में कम रूचि रखने वाले पाए गए। सामान्य छात्र वैज्ञानिक, साहित्यिक, तकनीकी एवं खेल क्षेत्रों में अत्यधिक रूचि रखने वाले पाए गए है। विशिष्ट विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन की अपेक्षा स्वास्थ्य समायोजन अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। सामान्य

छात्रों में सभी तरह का समायोजन सामान्य छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।

## 2.4 निष्कर्ष:-

शोधकर्ता द्वारा संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन करने पर पाया गया कि हिंदी भाषा, साहित्य और व्याकरण आदि के क्षेत्र में काफी अध्ययन हुए है पर अभी तक विद्यार्थियों की भाषा रूचि एवं योग्यता के उपर कोई ीाी अध्ययन आठवी कक्षा के विद्यार्थियों पर नहीं हुआ है इसी संदर्भ को ध्यान में रखकर यह अध्ययन किया जा रहा है कि आठवी कक्षा के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में रूचि तथा योग्यता के बीच पाए जाने वाले संबंध को विश्लेषणात्मक रूप से जाँचा जाए ताकि उनकी हिंदी भाषा में रूचि के घटक अनुसार हिंदी से संबंधित योग्यता के अनुसार व्यवसायिक दक्षता के अनुसार उन्हें कुशल किया जा सके और शिक्षक के योगदान को भी आंका जा सके।